2024-25

BIHAR STET
SANSKRIT
SOLVED PAPER &
PRACTICE BOOK

यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स

बिहार STET

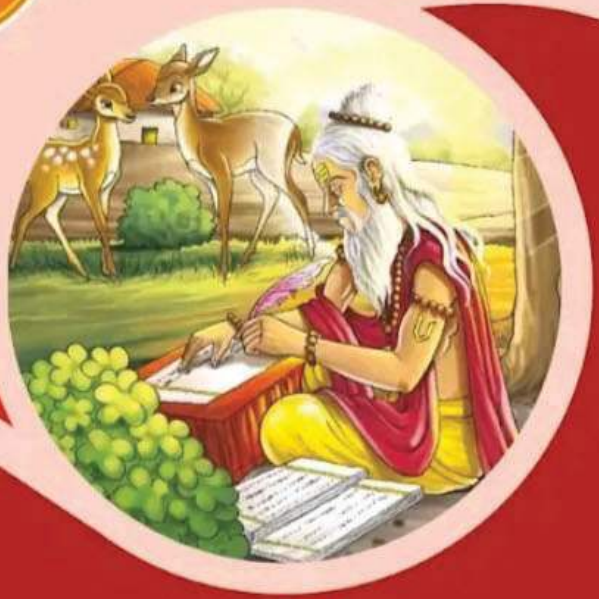

माध्यमिक
(कक्षा 9 एवं 10)

शिक्षक पात्रता परीक्षा

12 SETS

संस्कृत

सॉल्व्ड पेपर्स प्रैक्टिस बुक

- नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित
- विस्तृत व्याख्या सहित हल
- आयोग की संशोधित ANSWER-KEY द्वारा प्रमाणित

Exam. Date - 11-09-2023 (Shift-I)
Exam. Date - 09-09-2020 (Shift-III)

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति
माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा

BIHAR STET

संस्कृत

माध्यमिक स्तर (कक्षा IX से X) शिक्षक हेतु
सॉल्व्ड पेपर्स एवं प्रैक्टिस बुक

प्रधान सम्पादक
आनन्द कुमार महाजन

लेखन सहयोग
परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण त्रिपाठी, चरन सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
मो. : 9415650134
Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com
© All rights reserved with Publisher
प्रकाशन घोषणा
सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने रूप प्रिंटिंग प्रेस, प्रयागराज से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002 के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव और सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

मूल्य : 195/-

विषय-सूची

सॉल्व्ड पेपर्स

- माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा Bihar STET संस्कृत 3-13
  व्याख्या साहित हल प्रश्न पत्र परीक्षा तिथि : 11.09.2023, Shift-I
- माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा Bihar STET संस्कृत 14-24
  व्याख्या साहित हल प्रश्न पत्र परीक्षा तिथि : 09.09.2020, Shift-III

प्रैक्टिस सेट

- प्रैक्टिस सेट-1 ---------- 25-28
- प्रैक्टिस सेट-1 व्याख्या सहित हल---------- 29-36
- प्रैक्टिस सेट-2 ---------- 37-40
- प्रैक्टिस सेट-2 व्याख्या सहित हल---------- 41-48
- प्रैक्टिस सेट-3 ---------- 49-52
- प्रैक्टिस सेट-3 व्याख्या सहित हल---------- 53-60
- प्रैक्टिस सेट-4 ---------- 61-64
- प्रैक्टिस सेट-4 व्याख्या सहित हल---------- 65-70
- प्रैक्टिस सेट-5 ---------- 71-74
- प्रैक्टिस सेट-5 व्याख्या सहित हल---------- 75-81
- प्रैक्टिस सेट-6 ---------- 82-85
- प्रैक्टिस सेट-6 व्याख्या सहित हल---------- 86-92
- प्रैक्टिस सेट-7 ---------- 93-96
- प्रैक्टिस सेट-7 व्याख्या सहित हल---------- 97-103
- प्रैक्टिस सेट-8 ---------- 104-106
- प्रैक्टिस सेट-8 व्याख्या सहित हल---------- 107-111
- प्रैक्टिस सेट-9 ---------- 112-114
- प्रैक्टिस सेट-9 व्याख्या सहित हल---------- 115-119
- प्रैक्टिस सेट-10 ---------- 120-123
- प्रैक्टिस सेट-10 व्याख्या सहित हल ---------- 124-128

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति

माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा Bihar STET-2023

संस्कृत

[Exam. Date - 11.09.2023 (Shift-I)] **[Time - 10:00 AM-12:30 PM]**

1. अष्टाध्यायी के रचयिता कौन है?

(a) पतंजलि (b) पाणिनि

(c) कात्यायन (d) वरदराज

Ans. (b) : अष्टाध्यायी के रचयिता पाणिनि हैं। अष्टाध्यायी के रचयिता महर्षि पाणिनि हैं। अष्टाध्यायी में आठ अध्याय हैं प्रत्येक अध्याय 4-4 पाद में विभक्त है। कुल मिलाकर 32 पाद एवं 4000 सूत्र हैं। व्याकरण छः वेदांगों में मुख्य माना जाता है। अष्टाध्यायी को पाणिनीय-व्याकरण भी कहा जाता है।

पतञ्जलि- महाभाष्य

कात्यायन- वार्तिककार

वरदराज- लघुसिद्धान्त कौमुदी

2. हलन्त्यम् सूत्र से किसकी इत् संज्ञा होती है?

(a) अन्तिम वर्ण (b) अन्तिम पद

(c) अन्तिम व्यंजन वर्ण (d) अन्तिम स्वर

Ans. (c) : हलन्त्यम् सूत्र से अन्तिम व्यञ्जन वर्ण की इत् संज्ञा होती है। उपदेशेऽन्त्यम् हलित्स्यात्। उपदेश आद्योच्चारणम् उपदेश अवस्था में विद्यमान अन्त्य हल् इत्संज्ञक होता है।

अन्त्यं हल् उद्देश्य और इत् विधेय है। इस सूत्र का कार्य है हल् अक्षरों की इत्संज्ञा करना। उपदेश अवस्था में विद्यमान हल् - प्रत्याहार अर्थात् हल् वर्णों की इत्संज्ञा होती है।

3. लोप संज्ञा का विधायक सूत्र है–

(a) लोपःशाकल्यस्य (b) तस्य लोपः

(c) अदर्शनं लोपः (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : लोप संज्ञा का विधायक सूत्र 'अदर्शनं लोपः' है।

'अदर्शनं लोपः' लोप संज्ञा विधायक सूत्र है।

प्रसक्तस्यादर्शनं लोप संज्ञं स्यात्। अर्थात् किसी भी प्राप्त वर्ण आदि के न दिखाई पड़ने या सुने जाने को लोप कहते हैं।

4. 'क' से 'म' तक के वर्णों की संज्ञा है–

(a) स्पर्श (b) अन्तःस्थ

(c) ऊष्म (d) महाप्राण

Ans. (a) : 'क' से 'म' तक के वर्णों की स्पर्श संज्ञा है।

'कादयोमावसानाः स्पर्शाः'

क से म तक के वर्णों की स्पर्श संज्ञा होती है।

वर्गों की सं. 5 है प्रत्येक वर्ग में पाँच-2 वर्ण होते हैं। (5×5 = 25)

स्पर्श वर्णों की सं. 25 है।

क वर्ग- क,ख, ग, घ, ड़

च वर्ग- च, छ, ज, झ, ञ.

ट वर्ग- ट, ठ, ड, ढ, ण

त वर्ग- त, थ, द, ध, न

प वर्ग- प, फ, ब, भ, म

5. ''मुखनासिका वचनो .....''- रिक्त स्थान के लिए उचित पद चुनें–

(a) वर्णः (b) अनुनासिकः

(c) प्रयत्नः (d) स्वरः

Ans. (b) : ''मुखनासिका वचनः अनुनासिकः'' है।

मुख और नासिका से उच्चरित होने वाले वर्ण अनुनासिक कहलाते हैं।

मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः (1 - 1 - 8)

मुखसहितनासिकयोच्चार्यमाणो वर्णोऽनुनासिक संज्ञः स्यात्।

मुख और नासिका दोनों के सहयोग से बोला जानेवाला वर्ण अनुनासिक कहा जाता है।

6. ''तुल्यास्यप्रयत्नं .....''- रिक्त स्थान के लिए उचित पद चुनें–

(a) उच्चारणम् (b) अल्पप्राणम्

(c) स्पर्शम् (d) सवर्णम्

Ans. (d) : तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्''

ताल्वादिस्थानमाभ्यन्तर प्रयत्नश्चेत्येतद्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथं सवर्णसंज्ञं स्यात्।

तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न दोनों जिस-जिस वर्ण के समान हो, वे वर्ण परस्पर सवर्ण संज्ञक कहलाते हैं। ऋ और ट इन दोनों वर्णों की परस्पर सवर्ण संज्ञा होती है।

7. वर्णों की अतिशय समीपता को क्या कहते हैं?

(a) सवर्ण (b) संहिता

(c) समास (d) संयोग

Ans. (b) : वर्णों की अतिशय समीपता को संहिता कहते हैं।

परः सन्निकर्षः संहिता।

'वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात्।।

वर्णों या पदों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं। अतः संहिता कहने पर सभी सन्धि कार्य आदि होते हैं।

8. चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता किसे कहते हैं?

(a) रामायण (b) महाभारत
(c) पुराण (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता रामायण को कहते हैं। रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें सातकाण्ड हैं- बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड, उत्तर काण्ड।
इसमें 24000 श्लोक हैं, अतः इसे चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता भी कहते हैं। रामायण आदिकाव्य है। महर्षि वाल्मीकि के द्वारा विरचित होने के कारण इसे आर्षकाव्य भी कहते हैं।

9. आदिकाव्य किसे कहा जाता है?

(a) रघुवंश (b) रामायण
(c) महाभारत (d) कुमारसंभव

Ans. (b) : आदिकाव्य रामायण को कहा जाता है। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की। रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है। रामायण में मुख्यतः अनुष्टुप् छन्द है। रामायण और महाभारत दोनों महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है। गायत्री मंत्र में 24 वर्ण होते हैं। अतः यह मान्यता है कि इसको आधार मानकर रामायण में 24000 श्लोक लिखे गये हैं।
रघुवंश- कालिदास, महाभारत - वेदव्यास और कुमार सम्भवम्- कालिदास की रचना है।

10. रामायण में कितने काण्ड हैं?

(a) 6 (b) 7
(c) 8 (d) 9

Ans. (b) : रामायण में 7 (सात) काण्ड हैं। रामायण की रचना बाल्मीकि जी ने की।

काण्ड का नाम	सर्ग संख्या
बालकाण्ड	77 सर्ग
अयोध्याकाण्ड	119 सर्ग
अरण्यकाण्ड	75 सर्ग
किष्किन्धाकाण्ड	67 सर्ग
सुन्दरकाण्ड	68 सर्ग
युद्धकाण्ड	128 सर्ग
उत्तरकाण्ड	111 सर्ग

कुलमिलाकर 645 सर्ग हैं।

11. रामायण में सबसे अधिक प्रयुक्त छन्द हैं

(a) उपजाति (b) वंशस्थ
(c) अनुष्टुप् (d) आर्या

Ans. (c) : रामायण में सबसे अधिक प्रयुक्त छन्द अनुष्टुप है। रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की यह सात काण्डों में विभक्त है। इसमें 24000 श्लोक हैं अतः इसे चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता भी कहते हैं। रामायण तथा महाभारत दोनों महाकाव्य के रूप में प्रसिद्ध है। रामायण आदिकाव्य है। रामायण को आर्षकाव्य भी कहा जाता है।

12. रामायण में कितने श्लोक हैं?

(a) 12,000 (b) 24,000
(c) 20,000 (d) 40,000

Ans. (b) : रामायण में 24000 श्लोक है अतः इसे चतुर्विंशति साहस्त्री संहिता भी कहा जाता है। गायत्री मंत्र में 24 वर्ण होते हैं। अतः यह मान्यता है कि इसको आधार मानकर रामायण में 24000 श्लोक लिखे गये हैं।

13. रामायण के रचयिता कौन है?

(a) कालिदास (b) भास
(c) अश्वघोष (d) वाल्मीकि

Ans. (d) : रामायण के रचयिता आदिकवि वाल्मीकि है। इन्होंने रामायण की रचना 7 काण्डों तथा 24000 श्लोकों में की है। यहां मर्यादापुरुषोत्तम राम के गुणों का वर्णन हुआ है।

14. रामायण के किस काण्ड में अन्य काण्डों की अपेक्षा अधिक काव्यात्मक वर्णन है?

(a) सुन्दर काण्ड (b) अयोध्या काण्ड
(c) अरण्य काण्ड (d) किष्किन्धा काण्ड

Ans. (a) : रामायण के सुन्दरकाण्ड में अन्य काण्डों की अपेक्षा अधिक काव्यात्मक वर्णन है। रामायण की रचना वाल्मीकि ने की। रामायण में सात काण्ड है। सुन्दरकाण्ड में 68 सर्ग है। इसमें निम्न तथ्यों का वर्णन है-
हनुमान द्वारा सागर लांघ कर लङ्का में प्रवेश। सीता की खोज, अशोकवन में सीता दर्शन, अङ्गुलीयक वृत्तान्त।
विभीषण द्वारा दूतवधनिषेध तथा हनुमान की पूछ में आग लगाना तथा लङ्कादहन। हनुमान इस काण्ड के नायक हैं, उनके सुन्दर कार्यों के कारण इस काण्ड का नाम सुन्दरकाण्ड पड़ा।
अन्य काण्डों से अधिक काव्यात्मक होने से भी इसे 'सुन्दरकाण्ड' कहते हैं।

15. 'बृहत्त्रयी' मे किस महाकाव्य की गणना नहीं होती है?

(a) किरातार्जुनीय (b) शिशुपालवध
(c) नैषधीयचरित (d) रघुवंश

Ans. (d) : 'बृहत्त्रयी' में रघुवंश महाकाव्य की गणना नहीं होती है। शिशुपालवधम् किरातार्जुनीयम्, नैषधीयचरितम् की गणना बृहत्त्रयी में की जाती है।
जबकि रघुवंशम् कुमारसम्भवम् और मेघदूतम् की गणना लघुत्रयी में की जाती है।

16. मेघदूत में किस छन्द का प्रयोग है–

(a) अनुष्टुप् (b) हरिणी
(c) मन्दाक्रान्ता (d) शिखरिणी

Ans. (c) : मेघदूतम् में मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग है। मेघदूतम् के रचयिता कालिदास हैं। यह एक खण्डकाव्य है जो दो भाग में विभक्त है- (i) पूर्वमेघ (ii) उत्तरमेघ ।
प्राप्तरस- विप्रलम्भशृङ्गार, छन्द-मन्दाक्रान्ता, रीति-वैदर्भी
नायक-यक्ष (हेममाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार
पूर्वमेघ में 63 और उत्तर मेघ में 52 पद्य हैं।

17. किरातार्जुनीयम् किस कवि की कृति हैं?

(a) माघ (b) भारवि

(c) कालिदास (d) श्री हर्ष

Ans. (b) : किरातार्जुनीयम् भारवि कवि की रचना है। इसकी गणना बृहत्त्रयी में की जाती है। यह 18 सर्गों में विभक्त महाकाव्य है। यह वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसका उपजीव्य महाभारत का वन पर्व है। नायक-मध्यमपाण्डव अर्जुन (धीरोदात्त), प्रतिनायक-किरातवेश धारी-शिव,नायिका-द्रौपदी। प्रधानरस-वीर, गौड़रस- शृङ्गार तथा पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण हैं।

18. अपनी उपमाओं के लिए प्रसिद्ध कवि हैं–

(a) भारवि (b) माघ

(c) अश्वघोष (d) कालिदास

Ans. (d) : अपनी उपमाओं के लिए प्रसिद्ध कवि कालिदास हैं। भारवि अर्थ गौरव के लिए और दण्डी पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध कवि हैं।

कवि माघ में उपमा, अर्थगौरव, पदलालित्य ये तीनों गुण पाये जाते हैं।

''उपमा'' कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवम्

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।''

19. अर्थगौरव के लिए किस कवि की प्रसिद्धि है?

(a) भारवि (b) कालिदास

(c) भट्टि (d) माघ

Ans. (a) : अर्थगौरव के लिए भारवि प्रसिद्ध है। ''भारवेरर्थगौरवम्''

''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवम्

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।''

20. शिशुपालवध किस कवि की कृति है?

(a) कालिदास (b) भारवि

(c) माघ (d) भट्टि

Ans. (c) : शिशुपालवध माघ कवि की कृति है। यह 20 सर्गों में विभक्त महाकाव्य है। इसकी गणना बृहत्त्रयी में की जाती है। यह वीररस प्रधान महाकाव्य है। माघ के विषय में एक लोकोक्ति है- काव्येषुमाघः कविकालिदासः'' अर्थात् कवि की दृष्टि से कालिदास की श्रेष्ठता किन्तु काव्य की (महाकाव्य) के लेखन में माघ उत्कृष्ट हैं।

21. यक्ष किसका अनुचर था?

(a) इन्द्र का (b) कुबेर का

(c) विश्वकर्मा का (d) विष्णु का

Ans. (b) : यक्ष कुबेर का अनुचर था। मेघदूतम् महाकवि कालिदास की कृति है जो दो भागों में विभक्त है। संस्कृत के गीतिकाव्यों का आदिग्रन्थ महाकवि कालिदास का मेघदूतम् है। यक्ष को अलका धीश्वर कुबेर ने शाप दिया। यक्ष अपनी पत्नी में आसक्ति के कारण अपने कार्य में प्रमाद करता है इसलिए कुबेर ने एक वर्ष तक अपनी पत्नी से वियुक्त रहने का शाप दिया।

22. विरही यक्ष किस पर्वत के आश्रमों में दिन बिता रहा था?

(a) राममिरि (b) नीलगिरि

(c) विन्ध्य (d) चित्रकूट

Ans. (a) : विरही यक्ष रामगिरि पर्वत के आश्रमों में दिन बिता रहा था। मेघदूतम् महाकवि कालिदास की कृति है। इसका मंगलाचरण वस्तुनिर्देशात्मक है।

''कश्चित्कान्ता विरह गुरणा –––––––– राम गिर्याश्रमेषु।।

अर्थात् अपने कार्य से असावधान प्रिया के विरह से दुःसह, एक वर्ष तक भोगने वाले, स्वामी के शाप से नष्ट महिमा वाला, कोई यक्ष जनक की पुत्री के स्नान से पवित्र जलवाले, घने छाया वाले वृक्षों से युक्त, रामगिरि (पर्वत) के आश्रमों में निवास करता था।

23. मेघदूत के प्रथम पद्य ''कश्चित्कान्ताविरहगुरूणा'' में किस प्रकार का मंगलाचरण है?

(a) आशीर्वादात्मक (b) वस्तुनिर्देशात्मक

(c) नमस्कारात्मक (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : मेघदूतम् के प्रथम पद्य, कश्चित्कान्ताविरह गुरूणा'' में वस्तुनिर्देशात्मक मंगलाचरण का प्रयोग किया गया है। मेघदूतम् महाकवि कालिदास की रचना है। जो दो भागों में विभक्त है।

आशीर्वादात्मक- अभिज्ञानशाकुन्तलम्

वस्तुनिर्देशात्मक- मेघदूतम्

नमस्कारात्मक- नीतिशतकम्

24. 'कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु''- में कौन-सा अलंकार है?

(a) अतिशयोक्ति (b) उपमा

(c) उत्प्रेक्षा (d) अर्थान्तरन्यास

Ans. (d) : 'कामार्त्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'' में अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः'

संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।

इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे

कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतना चेतनेषु।।''

इस श्लोक के चतुर्थ चरण के सामान्य से तृतीय चरण के विशेष कथन का समर्थन किया गया है, इसलिए अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

25. 'धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः''- यह किसका विशेषण है?

(a) मेघ (b) यक्ष

(c) नदी (d) आकाश

Ans. (a) : 'धूम ज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः'' यह मेघ का विशेषण है।

धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्वः मेघः अर्थात् धूम, अग्नि, जल और वायु का मिश्रण मेघ हैं?

26. यक्ष मेघ से कहाँ जाने की प्रार्थना करता है?

(a) इन्द्रपुरी (b) पुष्पपुरी

(c) अलकापुरी (d) स्कन्दपुरी

Ans. (c) : यक्ष मेघ से अलकापुरी जाने की प्रार्थना करता है। जब कुबेर यक्ष को अलकापुरी से निकाल देता है तो यक्ष अपने विरह के दिनों को रामगिरि पर्वत पर व्यतीत करता है। यक्ष मेघ को अपना संदेशवाहक बनाकर यक्षिणी के पास अलकापुरी जाने की प्रार्थना करता है।

27. निम्नलिखित में से कारक का अर्थ क्या नहीं है?

(a) क्रिया-निमित्त (b) क्रियोपकारक

(c) कर्ता से संबंधित (d) क्रिया से अन्वित

Ans. (c) : कर्ता से सम्बन्धित कारक का अर्थ नहीं है। 'क्रियां करोति इति कारकम्'- क्रिया को करने वाला कारक है। 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्'- क्रिया के साथ जिसका सीधा सम्बन्ध होता है, कारक का सम्बन्ध कर्ता से नहीं होता है।

28. प्रातिपदिकार्थ में कौन-सी विभक्ति होती है?

(a) प्रथमा (b) द्वितीया

(c) तृतीया (d) चतुर्थी

Ans. (a) : प्रातिपदिकार्थ में प्रथमा विभक्ति होती है। 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा'- अर्थात्- प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र में, परिमाणमात्र में, वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है।

29. सम्प्रदान कारक में कौन-सी विभक्ति होती है?

(a) पंचमी (b) षष्ठी

(c) चतुर्थी (d) सप्तमी

Ans. (c) : सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। चतुर्थी सम्प्रदाने - सम्प्रदान में चतुर्थी होती है। 'कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्'- दान आदि कार्य या कोई क्रिया जिसके लिए की जाती है, उसे सम्प्रदान कहते हैं।

30. अधिकरण कारक का चिह्न है–

(a) का, के, की (b) मे, पर

(c) के द्वारा (d) को

Ans. (b) : अधिकरण कारक का चिह्न मे, पर है।

कारक	चिह्न
कर्ता	ने
कर्म	को
करण	से
सम्प्रदान	के लिए
अपादान	से अलगाव
सम्बन्ध	का, की, के
अधिकरण	मे, पर
सम्बोधन	हे, भो, अरे

31. किस सूत्र से सह के योग में अप्रधान कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है?

(a) कर्तृकरणयोस्तृतीया (b) अपवर्गे तृतीया

(c) हेतौ तृतीया (d) सहयुक्तेऽप्रधाने

Ans. (d) : सहयुक्ते सूत्र से सह के योग में अप्रधान कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

सह, साकम्, समम् आदि के साथ तृतीया विभक्ति होती है।

यथा- पित्रा सह गृहं गच्छति।

कर्तृकरयोस्तृतीया - कन्दुकेन क्रीडति

अपवर्गे तृतीया- मासेन ग्रन्थोऽधीतः।

हेतौ तृतीया- विद्यया यशो लभते।

32. 'साधकतमं .....''- रिक्त स्थान के लिए उचित पद चुनें–

(a) कर्मम् (b) अपादानम्

(c) करणम् (d) सम्प्रदानम्

Ans. (c) : ''साधकतमं करणम्'' क्रिया की सिद्धि में सहायक को करण कहते हैं।

सः पुस्तकेन पठति। (वह पुस्तक से पढ़ता है।) यहाँ पढ़ने की क्रिया पुस्तक से हो रही है। अतः यहाँ पुस्तक साधन है।

कर्म	–	द्वितीया
अपादानम	–	पञ्चमी
करणम्	–	तृतीया
सम्प्रदानम्	–	चतुर्थी

33. ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति-इस उदाहरण में तृणं में किस सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई है–

(a) कर्मणि द्वितीया (b) कर्तुरीप्सिततमं कर्म

(c) तथायुक्तं चानीप्सितम् (d) अकथितं च

Ans. (c) : ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति-इस उदाहरण में तृणं में तथायुक्तं चानीप्सितम् सूत्र से द्वितीया विभक्ति हुई है। 'तथायुक्तं' चानीप्सितम् सूत्र कुछ पदार्थ ऐसे भी होते हैं जो कर्ता को अनीप्सित (अप्रिय) होते हुए भी ईप्सित (प्रिय) की तरह क्रिया से सम्बद्ध रहते हैं अतः उनकी भी कर्म संज्ञा होती है। जैसे- ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।' गाँव जाते हुए तिनके को छूता है।

नोटः नियमतः यहाँ ''कर्मणि द्वितीया'' से द्वितीया विभक्ति का विधान है। पूर्वोक्त सूत्र से कर्म संज्ञा होती है परन्तु आयोग ने ''तथायुक्तं चानीप्सितम्'' को माना है।

34. कादम्बरी की कथा का मूल स्त्रोत क्या है?

(a) कथासरित्सागर (b) बृहत्कथा

(c) बृहत्कथामंजरी (d) बृहत्कथालोकसंग्रह

Ans. (b) : कादम्बरी की कथा का मूल स्त्रोत बृहत्कथा है। कादम्बरी बाणभट्ट की रचना है जो दो भागों में विभक्त है पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध की रचना स्वयं बाणभट्ट ने की एवं उत्तरार्ध की रचना उनके पुत्र पुलिन्द भट्ट ने की।

बृहत्कथा गुणाढ्य की रचना है।

35. कादम्बरी के रचनाकार कौन हैं?

(a) सुबन्धु (b) बाणभट्ट
(c) दण्डी (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : कादम्बरी के रचनाकार बाणभट्ट हैं। यह दो खण्ड में विभक्त है- पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध। नायक-चन्द्रापीड, नायिका-कादम्बरी इसमें नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण का प्रयोग है। कादम्बरी में तीन जन्मों की कथा है। इसका नायक चन्द्रापीड धीरोदात्त कोटि का नायक है और नायिका विवाह से पूर्व परकीया मुग्धा नायिका लेकिन विवाह के बाद 'स्वकीया मध्या नायिका' है।

36. बाणभट्ट को किस राजा ने आश्रय दिया था?

(a) राज्यवर्धन (b) सोमवर्धन
(c) कृष्णवर्धन (d) हर्षवर्धन

Ans. (d) : बाणभट्ट को राजा हर्षवर्धन ने आश्रय दिया। बाणभट्ट की रचना कादम्बरी है। हर्ष का राज्याभिषेक अक्टूबर 606 ई. में हुआ, और उनकी मृत्यु 648 ई. में की। ह्वेनसांग ने 629 से 645 ई. तक भारत भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था। बाणभट्ट का समय भी सातवीं शताब्दी है। अतः बाणभट्ट राजा हर्ष के ही समकालीन थे।

37. तारापीड किसके पिता थे?

(a) वैशम्पायन (b) चन्द्रापीड
(c) हारापीड (d) सूर्यपीड

Ans. (b) : तारापीड चन्द्रापीड के पिता थे। तारापीड और चन्द्रापीड का वर्णन बाणभट्ट के कादम्बरी में मिलता है। शुकनास तारापीड का मंत्री है जो चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के समय उन्हें उपदेश देता है।

38. अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः वाक्यांश किस ग्रन्थ से उद्धृत है?

(a) दशकुमारचरित (b) हर्षचरित
(c) कादम्बरी (d) वासवदत्ता

Ans. (c) : अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः 'यह वाक्यांश कादम्बरी से उद्घृत है। धनरूपी-मद अन्तिम अवस्था में भी शान्त नहीं होता। चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के समय शुकनास उपदेश देते है हुए चन्द्रापीड के लिए 'तात' शब्द का प्रयोग करते हैं। शुकनाश लक्ष्मी के बारे में बताते हुए कहते हैं कि लक्ष्मी का मद वृद्धावस्था में भी शान्त नहीं होता है।

39. शुकनासोपदेश में लक्ष्मी को कहा गया है–

(a) चंचला
(b) दुष्टों पर कृपा करने वाली
(c) तृष्णा को बढ़ाने वाली
(d) इनमे से सभी

Ans. (d) : शुकनासोपदेश में लक्ष्मी को चंचला, दुष्टों पर कृपा करने वाली, तृष्णा को बढ़ाने वाली कहा गया है।
चन्द्रापीड के राज्याभिषेक के अवसर पर तारापीड का मंत्री 'शुकनास' चन्द्रापीड को उपदेश देता है। शुकनास के अनुसार युवावस्था के प्रभाव से उत्पन्न अन्धकार सूर्य से भेदा नहीं जा सकता तथा मणियों एवं दीपक के प्रकाश से दूर नहीं किया जा सकता।

40. शुकनासोपदेश में क्या वर्णित नहीं है?

(a) लक्ष्मी की चंचलता (b) युवावस्था के दोष
(c) गुरू के उपदेश की महिमा (d) विन्ध्याटवी-वर्णन

Ans. (d) : शुकनासोपदेश में विन्ध्याटवी-वर्णन नहीं वर्णित है। जबकि लक्ष्मी की चंचलता, युवावस्था के दोष, गुरू के उपदेश की महिमा का वर्णन मिलता है।

41. शिवराजविजय है एक –

(a) ऐतिहासिक उपन्यास (b) ऐतिहासिक कथा
(c) ऐतिहासिक नाटक (d) आध्यायिका

Ans. (a) : शिवराज विजय एक ऐतिहासिक उपन्यास है। शिवराजविजय की रचना व्यासजी 1870 ई. में लिखी लेकिन इसका प्रकाशन 1901 ई. में उनकी मृत्यु के बाद हुआ। इनकी एक रचना बिहारी बिहार भी मिलती है जिसमें इन्होंने अपना संक्षिप्त जीवन-चरित लिखा है।

42. शिवराजविजय के रचनाकार कौन हैं?

(a) बाणभट्ट (b) श्रीहर्ष
(c) श्री अम्बिका दत्त व्यास (d) दण्डी

Ans. (c) : शिवराज विजय के रचनाकार श्री अम्बिकादत्त व्यास जी हैं। व्यास जी हिन्दी संस्कृत और बंगला के ज्ञाता थे।
एक घड़ी (24 मी.) में 100 श्लोकों की रचना करने से व्यास जी को 'घटिकाशतक की उपाधि दी गयी थी।
सौ प्रश्नों को एक साथ सुनकर सभी का उत्तर एक साथ देने की अद्भुत क्षमता के लिए इन्हें 'शतावधान' की उपाधि दी गयी।

43. श्री अम्बिकादत्त व्यास का जन्म किस राज्य में हुआ था ?

(a) बिहार (b) राजस्थान
(c) उत्तर प्रदेश (d) बंगाल

Ans. (b) : श्री अम्बिकादत्त व्यास का जन्म राजस्थान राज्य में हुआ था राज्य-राजस्थान, जिला-जयपुर, ग्राम-रावत जी का झूला, मुहल्ला-सिलावटी। जन्म चैत्रशुक्ल अष्टमी सं. 1915 (सन् - 1858) मृत्यु- मार्ग शीर्ष (अगहन) कृष्णपक्ष त्रयोदशी सोमवार सं.- 1957 (सन् 1900 ई.)।

44. शिवराजविजय में किस रस की प्रधानता है?

(a) शान्त रस (b) करुण रस
(c) वीर रस (d) रौद्र रस

Ans. (c) : शिवराजविजय में वीररस की प्रधानता है।
शिवराज विजय संस्कृत वाङ्मय का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है जो 3 विरामों एवं 12 निःश्वासों में विभक्त है। इसमें दो समान्तर धाराएँ स्वतन्त्र रूप से प्रवाहित होती हैं- एक के नायक शिवाजी हैं तो दूसरे के नायक रघुवीर सिंह जी हैं। इसमें मुगलकालीन समाज का सुन्दर चित्रण किया गया है।

45. शिवराजविजय का नायक कौन है?

(a) रघुवीर सिंह (b) गौर सिंह
(c) योगी राज (d) शिवाजी

Ans. (d) : शिवराजविजय का नायक शिवाजी हैं। यह अम्बिकादत्त व्यास का ऐतिहासिक वीर रस प्रधान उपन्यास है। विरोधाभास व्यास जी का प्रिय अलङ्कार है। शिवराजविजय में पाञ्चाली रीति के नायक शिवाजी हैं तो दूसरे के नायक रघुवीर सिंह हैं। नायक-शिवाजी, कथानक-शिवाजी की जीवन चरित।

46. शिवराजविजय का प्रारंभ किस दृश्य से होता है?

(a) संध्या वर्णन (b) सूर्योदय वर्णन
(c) भारत-दुर्दशा वर्णन (d) पर्वत वर्णन

Ans. (b) : शिवराजविजय का प्रारम्भ सूर्योदय दृश्य से होता है। शिवराजविजय का मंगलाचरण 'नमस्कारात्मक' और वस्तु 'निर्देशात्मक' है। शिवराजविजय का आरम्भ प्रातः काल एवं सूर्य भगवान् के वर्णन से होता है।

47. अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक के रचनाकार कौन हैं?

(a) भारवि (b) कालिदास
(c) माघ (d) भास

Ans. (b) : अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के रचनाकार कालिदास हैं। यह सात अंकों में विभक्त है इसका प्रधान रस शृङ्गार है। इसका कथानक राजा दुष्यन्त एवं शकुन्तला का परस्पर प्रेम, विरह एवं मिलन का वर्णन है। शकुन्तलोपाख्यान का उपजीव्य काव्य-महाभारत के आदि पर्व का शकुन्तलोपाख्यान है।
अभिज्ञान शाकुन्तलम् - दुष्यन्त (धीरोदात्त) कोटि का नायक
नायिका - शकुन्तला (मुग्धा) कोटि की नायिका है।

48. संस्कृत का सर्वश्रेष्ठ नाटक कौन है?

(a) मालविकाग्निमित्र (b) अभिज्ञानशाकुन्तल
(c) विक्रमोर्वशीय (d) उत्तररामचरित

Ans. (b) : संस्कृत का सर्वश्रेष्ठ नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदास की नाट्य रचना है। इसकी उत्कृष्टता के बारे में कहा गया है- काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला। तत्रापि च चतुर्थो अङ्कः तत्रश्लोकश्च चतुष्टयम्।

49. अभिज्ञानशाकुन्तल कितने अंकों में निबद्ध है?

(a) 5 अंकों में (b) 6 अंकों में
(c) 7 अंकों में (d) 8 अंकों में

Ans. (c) : अभिज्ञानशाकुन्तल 7 अकों में निबद्ध है। यह कालिदास की रचना है।

प्रथम अंक	–	आश्रम प्रवेश
द्वितीय अंक	–	आश्रम निवेश
तृतीय अंक	–	मिलन अंक
चतुर्थ अंक	–	विदाई अंक
पञ्चम अंक	–	प्रत्याख्यान''
षष्ठ अंक	–	'पश्चात्ताप' अङ्क
सप्तम अंक	–	पुनर्मिलन अंक

50. अभिज्ञानशाकुन्तल का कौन अंक सर्वश्रेष्ठ माना जाता है?

(a) प्रथम (b) चतुर्थ
(c) पंचम (d) षष्ठ

Ans. (b) : अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अंक सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। 'तत्रापि च चतुर्थो अङ्कः' इसी की सर्वश्रेष्ठता के लिए कहा गया है। चतुर्थ अंक का प्रारम्भ भी शुद्ध विष्कम्भक के साथ होता है।
शकुन्तला 'गर्भिणी है यह समाचार कण्व को 'अशरीरधारी छन्दोमयी वाणी ने' यज्ञशाला में प्रविष्ट होने पर दिया।
जाती हुई शकुन्तला अपनी लता-बहन 'वनज्योत्स्ना' से गले मिलकर विदाई लेती है। जो 'आम्रवृक्ष से लिपटी है। और इसे धरोहर के रूप में सखियों के हाथ में देती है।

51. शकुन्तला की माता कौन थी?

(a) मेनका (b) रम्भा
(c) उर्वशी (d) सानुमती

Ans. (a) : शकुन्तला की माता मेनका थी। 'शकुन्तला' ऋषि विश्वामित्र तथा स्वर्ग की अप्सरा मेनका की पुत्री थी। देवराज इन्द्र ने तपस्यारत महर्षि विश्वामित्र की तपस्या को भंग करने के लिए अप्सरा मेनका को भेजा। मेनका की सुन्दरता पर मोहित होकर विश्वामित्र की तपस्या भंग हो जाती हैं।

52. शकुन्तला के पिता कौन थे?

(a) विश्वामित्र (b) वसिष्ठ
(c) काश्यप (d) गौतम

Ans. (a) : शकुन्तला के पिता विश्वामित्र थे। शकुन्तला ऋषि विश्वामित्र तथा अप्सरा मेनका की पुत्री है। मेनका शकुन्तला को जन्म देकर तुरन्त स्वर्ग को चली गई। जंगल में अकेली नवजात शिशु को देखकर कण्व ऋषि को दया आ गई और वे इसे अपने साथ ले लाए। उन्होंने शकुन्तला का पालन-पोषण किया तथा पिता तथा माता की समस्त भूमिका निभाई।
कण्व शकुन्तला के पालिता पिता थे।

53. ''दुर्वासा का शाप'' अभिज्ञानशाकुन्तल के किस अंक में वर्णित है?

(a) द्वितीय (b) तृतीय
(c) चतुर्थ (d) पंचम

Ans. (c) : ''दुर्वासा का शाप'' अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अंक में वर्णित है।
''विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।''
अर्थात् एकाग्रचित्त से जिसका चिन्तन करती हुई तू उपस्थित हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही हो। वह तेरे स्मरण दिलाने पर भी तुझको स्मरण नहीं करेगा, जैसे उन्मत्त व्यक्ति पहले कही बात को स्मरण नहीं करता है।

54. ''कविताकामिनी का हास''- किस कवि को कहा गया है?

(a) कालिदास (b) भास
(c) भारवि (d) माघ

Ans. (b) : ''कविताकामिनी का हास' भास को कहा जाता है। भास ने तेरह नाटकों की रचना चार भागों में की।
रामायण मूलक- अभिषेकनाटक, प्रतिमानाटक
महाभारतमूलक- मध्यमव्यायोग, दूतवाक्यम् कर्णभारम्, दूतघटोत्कच, पञ्चरात्रम् ऊरुभङ्गम्, बालचरितम्
उदयनकथामूलक - प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्तम्
कल्पनामूलक- अविमारक, दरिद्रचारुदत्त

55. स्वप्नवासवदत्तम् है एक –

(a) महाकाव्य (b) नाटक
(c) गद्यकाव्य (d) नाटिका

Ans. (b) : 'स्वप्नवासवदत्तम् एक नाटक है। इसकी रचना भास ने की। यह छः अंकों में विभक्त है। यौगन्धरायणं का वासवदत्ता के मरने के प्रवाद को फैलाकर उदयन का पद्मावती से विवाह कराना तथा उदयन के अपहृत राज्य को पुनः प्राप्त कराने का वर्णन है।

56. स्वप्नवासवदत्तम् के नायक कौन है?

(a) दर्शक (b) उदयन
(c) आरूणि (d) प्रद्योतराज

Ans. (b) : स्वप्नवासवदत्तम् के नायक उदयन हैं।
वासवदत्तम् का नायक उदयन धीर ललित कोटि का नायक है। नायिका वासवदत्ता है। विदूषक-वसन्तक, कञ्चुकी-बादरायण (उदयन का), रम्भ (महासेन प्रद्योत का), प्रतिनायक-आरुणि, रीति - वैदर्भी, गुण-प्रसाद, माधुर्य और ओज का समन्वय है।

57. उदयन किस देश के राजा थे?

(a) अवन्ति (b) मगध
(c) वत्स (d) राजगृह

Ans. (c) : उदयन वत्स देश के राजा थे। उदयन वासवदत्ता नाटक के नायक हैं जिसकी रचना 'भास' ने की। यह 6 अंकों में विभक्त एक ऐतिहासिक नाटक है।
उदयनवत्सदेश का राजा है। वह दयालु, उदार तथा वीणा बजाने में निपुण है। उदयन दयार्द्रचित्त तथा अपने से बड़ों का आदर करने वाला व्यक्ति है।
सुन्दरता में उदयन की तुलना बिना धनुष बाण के कामदेव से की गयी है।

58. पद्मावती किस राज्य की राजकुमारी थी?

(a) मगध (b) वैशाली
(c) उज्जयिनी (d) मिथिला

Ans. (a) : पद्मावती मगध राज्य की राजकुमारी है। पद्मावती राजा उदयन की द्वितीय पत्नी तथा नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र है। वह मगध के राजा दर्शक की बहन है। वह धर्मपरायण स्त्री है, इसीलिए वासवदत्ता को न्यासरूप में स्वीकार करती है। पद्मावती, उदयन के रूप और गुणों से प्रभावित रहती है तथा भविष्यवाणी के अनुसार उसी से विवाह भी करती है। एक आदर्श नारी का सम्पूर्ण गुण पद्मावती में है।

59. उदयन के प्रधानमंत्री का नाम क्या था?

(a) यौगन्धरायण (b) पुष्पक
(c) आवर्त्तक (d) रूमण्वान

Ans. (a) : उदयन के प्रधानमंत्री का नाम यौगन्धरायण था।
यौगन्धरायण उदयन का प्रधान अमात्य है तथा इस नाटक में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला पात्र है।
वह सभी परिस्थितियों में तथा सब प्रकार के उपायों में अपने स्वामी एवं राज्य का संरक्षण करता है। इसकी योजना को सभी उच्च पदस्थ लोग भी मानते हैं।
यौगन्धरायण के सम्पूर्ण चरित्र को भास ने एक वाक्य में लिखा है- 'यौगन्धरायणो भवान ननु''

60. किस ग्राम के अग्निदाह में वासवदत्ता जल मरी?

(a) अवन्ति (b) लावाणक
(c) राजगृह (d) चम्पा

Ans. (b) : लावाणक ग्राम के अग्निदाह में वासवदत्ता जलमरी।
वासवदत्ता उज्जयिनी नरेश प्रद्योत की पुत्री तथा 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की नायिका है। लावाणक ग्राम की घटना प्रथम अंक में वर्णित है। ब्रह्मचारी बताता है कि वह वत्सदेश के लावाणक ग्राम में वेद का अध्ययन करता है लेकिन वत्सराज उदयन के शिकार खेलने के लिए जाने पर गाँव में आग लग जाने से उनकी पत्नी वासवदत्ता जलकर मर गयी। अतः महाराज उदयन अत्यन्त शोक ग्रस्त हैं।

61. ऋग्वेद का प्रथम सूक्त है–

(a) इन्द्रसूक्त (b) अग्नि सूक्त
(c) विष्णुसूक्त (d) सूर्य सूक्त

Ans. (b) : ऋग्वेद का प्रथम सूक्त अग्नि सूक्त है।
अग्निसूक्त- मण्डल-1 सूक्त-1 कुलमन्त्र-9 ऋषि-मधुच्छन्दा
देवता-अग्नि, छन्द- गायत्री, स्वर षड्ज
अग्निमीळे पुरोहितं', यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ।। 1।1।1।।

62. किस देवता को यज्ञ का पुरोहित कहा जाता है?

(a) अग्नि (b) इन्द्र
(c) सविता (d) उषा

Ans. (a) : अग्नि देवता को यज्ञ का पुरोहित कहा गया है। अग्नि सूक्त ऋग्वेद का प्रथम सूक्त है इसके ऋषि मधुच्छन्दा हैं।
इसमें कुल मंत्रों की संख्या 9 है।
'अग्निमीले पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम्
होतारं रत्नधातमम्।।1।1।1।।
यज्ञ के पुरोहित, दीप्तिमान्, देवों को बुलाने वाले ऋत्विक् और रत्नधारी अग्नि की मैं स्तुति करता हूँ।

63. सविता देव के लिए किस विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है?

(a) हिरण्याक्षः (b) हिरण्यहस्तः
(c) सुनीथः (d) दिवःदुहितः

Ans. (d) : सविता देव के लिए दिवःदुहितः विशेषण का प्रयोग नहीं हुआ है।
जबकि हिरण्याक्षः, हिरण्यहस्तः, सुनीथ; सवितादेव का विशेषण है।

64. कौन देवता अंतरिक्ष लोक से पुनःपुनः आते हुए देवताओं और मनुष्यों को अपने-अपने कार्यों में लगाते हैं–

(a) इन्द्र (b) सविता
(c) अग्नि (d) विष्णु

Ans. (b) : सविता देवता अंतरिक्ष लोक से पुनः पुनः आते हुए देवताओं और मनुष्यों को अपने-अपने कार्यों में लगाते हैं।

65. किस देवता के तीन मधुपूर्ण पदों के पराक्रम का वर्णन ऋग्वेद में प्राप्त होता है?

(a) इन्द्र (b) विष्णु
(c) सूर्य (d) रूद्र

Ans. (b) : विष्णु देवता के तीन मधुपूर्ण पदों के पराक्रम का वर्णन ऋग्वेद में प्राप्त होता है।
विष्णु सूक्त ऋग्वेद का सूक्त है इसके ऋषि दीर्घतमा हैं।
'इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।'
समूढमस्य पाशसुरे स्वाहा।।
अर्थात् सर्वव्यापी भगवान् श्री हरि विष्णु ने इस जगत् को धारण किया हुआ है और वे ही पहले भूमि, दूसरे अन्तरिक्ष और तीसरे द्युलोक में तीन पदों को स्थापित करते हैं अर्थात् सर्वत्र व्याप्त हैं इन विष्णु देव में ही समस्त विश्व व्याप्त है। हम उनके निमित्त हवि प्रदान करते हैं।

66. ''मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा'' – ये विशेषण किस देवता के लिए प्रयुक्त हैं?

(a) इन्द्र (b) विष्णु
(c) अग्नि (d) पर्यन्य

Ans. (b) : ''मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा'' ये विशेषण विष्णु देवता के लिए प्रयुक्त है।
प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। अर्थात्
भयंकर सिंह के समान पर्वतों में विचरण करने वाले सर्वव्यायी देव विष्णु।
आप अतुलित पराक्रम के कारण स्तुति-योग्य हैं। सर्वव्यापक विष्णु देव के तीनों स्थानों में सम्पूर्ण प्राणी निवास करते हैं।

67. ऋग्वेद का सबसे महान् राष्ट्रीय देवता कौन है?

(a) इन्द्र (b) वरूण
(c) विष्णु (d) अग्नि

Ans. (a) : ऋग्वेद का सबसे महान राष्ट्रीय देवता इन्द्र है।
प्रधानन्वस्य महतो महानि सत्य सत्यस्य करणानि वोचम्
त्रिकट केस्वपिवत् सतस्यास्य मदे अहिमेन्द्रो जघान।।
ऋषि गृत्समद इन्द्र की विशेषता प्रकट करते हुए कहते हैं, सत्यस्वरूप इस महान शक्तिशाली इन्द्र के सर्वथा स्थिर कर्मों को प्रकृष्ट रूप में से कहता हूँ। इन्द्र ने तीन पात्रों में सोम-रस का पान किया। इस सोम-रस के मद में वृत्रासुर का वध किया।

68. राम शब्द, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन का रूप है–

(a) रामाः (b) रामान्
(c) रामेभ्यः (d) रामैः

Ans. (b) : राम शब्द, द्वितीया विभक्ति, बहुवचन का रूप है- 'रामान्'

राम (अकारान्त पुल्लिंग)

रामः	रामौ	रामाः
रामम्	रामौ	रामान्
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
रामे	रामयोः	रामेषु
हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

69. लतायाम् किस विभक्ति का रूप है?

(a) तृतीया (b) द्वितीया
(c) षष्ठी (d) सप्तमी

Ans. (d) : लतायाम् सप्तमी विभक्ति का रूप है

लता (आकारान्त स्त्रीलिंग)

लता	लते	लताः
लताम्	लते	लताः
लतया	लताभ्याम्	लताभिः
लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
लतायाः	लतयोः	लतानाम्
लतायाम्	लतयोः	लतासु
हे लते!	हे लते!	हे लताः!

70. साधु शब्द का पंचमी विभक्ति, एक वचन का रूप है–

(a) साधवे (b) साधोः
(c) साधौ (d) साध्वोः

Ans. (b) : साधु शब्द का पञ्चमी विभक्ति एकवचन का रूप - साधोः है।

साधुः	साधू	साधवः
साधुम्	साधू	साधून्
साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
साधौ	साध्वोः	साधुषु
हे साधो!	हे साधू!	हे साधवः!

71. फल शब्द का तृतीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक का रूप किसके अनुसार होता है?

(a) राम (b) लता
(c) मुनि (d) साधु

Ans. (a) : फल शब्द का तृतीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक का रूप राम के अनुसार चलता है।
फल का रूप प्रथमा, द्वितीया विभक्ति में इस प्रकार चलता है-

प्रथमा वि-	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया वि-	फलम्	फले	फलानि

72. गौ शब्द का षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का रूप है–

(a) गोनाम् (b) गवाणाम्
(c) गाम् (d) गवाम्

Ans. (d) : गौ शब्द का षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है- गवाम्
गो (ओकारान्तपुल्लिंग)

गौः	गावौ	गावः
गाम्	गावौ	गावः
गवा	गोभ्याम्	गोभिः
गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
गोः	गवोः	गवाम्
गवि	गवोः	गोषु
हे गौः!	हे गवौ!	हे गावः!

73. नद्यैः- किस विभक्ति वचन का रूप है?

(a) तृतीया, बहुवचन (b) षष्ठी, द्विवचन
(c) चतुर्थी, एकवचन (d) पंचमी, एकवचन

Ans. (c) : नद्यैः चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है।
नदी (ईकारान्तस्त्रीलिङ्ग)

नदी	नद्यौ	नद्यः
नदीम्	नद्यौ	नदीः
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
नद्याम्	नद्योः	नदीषु
हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

74. वधू शब्द, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रूप है–

(a) वधूः (b) वध्वाः
(c) वध्वः (d) वध्वा

Ans. (c) : वधू शब्द, प्रथमा विभक्ति, बहुवचन का रूप है- वध्वः।
वधू (ऊकारान्त स्त्रीलिंग)

वधूः	वध्वौ	वध्वः
वधूम्	वध्वौ	वधूः
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
वध्वाम्	वध्वोः	वधूषू
हे वधु!	हे वध्वौ!	हे वध्वः!

75. सबसे प्राचीन वेद कौन है?

(a) यजुर्वेद (b) सामवेद
(c) ऋग्वेद (d) अथर्ववेद

Ans. (c) : सबसे प्राचीन वेद ऋग्वेद है।
वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन व प्रथम ग्रन्थ का नाम ऋग्वेद है। ऋग्वेद को चारों वेदों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण, अक्षुण्ण तथा आदरणीय माना जाता है। ऋग्वेद के आचार्य पैल हैं जो व्यास के शिष्य थे। ऋग्वेद का ऋत्विक् 'होता' है।

76. ''वेदोऽखिलो.....''- रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त पद चुनें–

(a) विद्या (b) धर्ममूलम्
(c) प्रमाणम् (d) ज्ञानम्

Ans. (b) : ''वेदोऽखिलो धर्ममूलम्!''
वेद सम्पूर्ण धर्म का मूल है। वेदों की सं. चार है।
ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद

77. शौनक चरणव्यूह के अनुसार ऋग्वेद की कितनी शाखाएँ हैं–

(a) 4 (b) 5
(c) 6 (d) 7

Ans. (b) : शौनक चरण व्यूह के अनुसार ऋग्वेद की पाँच शाखाएं है। जिनके नाम है- शाकल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, माण्डूकायन।

78. पृथ्वी-सूक्त किस वेद में हैं?

(a) ऋग्वेद (b) यजुर्वेद
(c) सामवेद (d) अथर्ववेद

Ans. (d) : पृथ्वी-सूक्त अथर्ववेद में है।
पृथ्वी-सूक्त
कुल मंत्र-63, ऋषि-अथर्वा, देवता-भूमि, छन्द-त्रिष्टुप्
जगती, बृहती, अनुष्टुप् आदि।

79. यजुर्वेद के मंत्रों का संकलन किस ऋत्विक् के लिए किया गया था?

(a) होता (b) अध्वर्यु
(c) उद्गाता (d) ब्रह्मा

Ans. (b) : यजुर्वेद के मंत्रों का संकलन अध्वर्यु ऋत्विक् के लिए किया गया था।

वेद	ऋत्विक्
ऋग्वेद	होता
यजुर्वेद	अध्वर्यु
सामवेद	उद्गाता
अथर्ववेद	ब्रह्मा

80. संगीत विषयक तत्वों का विस्तृत विवेचन किस वेद में है?

(a) अथर्ववेद (b) कृष्ण यजुर्वेद

(c) सामवेद (d) शुक्ल यजुर्वेद

Ans. (c) : संगीत विषयक तत्वों का विस्तृत विवेचन सामवेद में है। साम अर्थात् स्वरों के आरोहावरोह से युक्त मन्त्रों का गान करना। साम का अर्थ है- गायन अर्थात् 'गीतियुक्त मन्त्र'

81. माहेश्वर सूत्रों की संख्या कितनी है?

(a) 10 (b) 12

(c) 13 (d) 14

Ans. (d) : माहेश्वर सूत्रों की संख्या चौदह है।
माहेश्वर सूत्रों की रचना महेश्वर के ढक्वानिनाद से हुयी है। अर्थात् डमरू से।
अइउण् ऋऌक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्, लण् ञमङणनम्।
झभञ्, घढधष्, जबगडदश् खफछठथचटतव्,
कपय्, शषसर, हल्।

82. हल प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन से वर्ण आते है?

(a) व्यंजन (b) स्वर

(c) अनुनासिक (d) /सवर्ण

Ans. (a) : हल प्रत्याहार के अन्तर्गत व्यञ्जन वर्ण आते हैं।
हल् ह य व र ल ञ म ङ ण न झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह (व्यञ्जन)
अच्- अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ औ (स्वर)

83. अच् का तात्पर्य है–

(a) स्वर वर्ण

(b) व्यञ्जन वर्ण

(c) अनुनासिक वर्ण

(d) सवर्ण

Ans. (a) : अच् का तात्पर्य-स्वर से है।
अच् प्रत्याहार के अन्तर्गत सम्पूर्ण स्वर आते हैं।
अच्- अ, इ, उ, ऋ, ऌ,ए, ओ, ऐ, औ
हल् प्रत्याहार व्यञ्जन वर्ण का द्योतक है।

84. अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत कौन से वर्ण आते है?

(a) अ,इ,उ,ण,ऋ,ऌ,क् (b) अ,इ,उ,ऋ,ऌ,क्

(c) अ,इ,उ,ऋ,ऌ (d) अ,इ,उ,ऋ

Ans. (c) : अक् प्रत्याहार के अन्तर्गत अ, इ, उ, ऋ, ऌ वर्ण आते हैं। अन्य विकल्प असंगत है।

85. प्रत्याहार संज्ञा का विधायक सूत्र है–

(a) आदिरन्त्येन सहेता

(b) अदेङ्गुणः

(c) वृद्धिरेचि

(d) अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः

Ans. (a) : प्रत्याहार संज्ञा का विधायक सूत्र 'आदिरन्त्येन सहेता' है।
अन्त्येनेता सहित आदिर्मध्यगानां स्वस्य च संज्ञा स्यात्।
यथाऽणिति अइउवर्णानां संज्ञा। एवमच् हल् अलित्यादयः।।
अन्तिम इत-संज्ञक वर्ण के साथ आदिवाला वर्ण अपनी और बीच के सभी वर्णों की प्रत्याहार-संज्ञा करता है। जैसे अण्- अ, इ, उ वर्णों की संज्ञा होती है।

86. पदविधि किस पद की होती है?

(a) संक्षिप्तता (b) एकपदीभाव

(c) a और a दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : पदविधि संक्षिप्तता पद की होती है। यः कश्चिदिह शास्त्रे पदविधिः श्रूयते स सर्वः समर्थो वेदितव्यः। विधीयत इति विधिः। पदानां विधिः पदविधिः। सः पुनः समासादिः। अर्थात् समास का अर्थ संक्षिप्तीकरण है अतः संक्षिप्त पद की पद विधि होती है।

87. समास का क्या अर्थ है?

(a) संक्षिप्तता (b) एकपदीभाव

(c) a और b दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : समास का अर्थ है- संक्षिप्तता और एकपदीभाव। समसनं समासः संक्षेप को समास कहते हैं। अर्थात् बहुत से पदों का मिलकर एकपद हो जाना समास कहलाता है। समास में दो पद होते हैं- पूर्वपद एवं उत्तर पद।

88. ''कथ्यते..... इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली''- रिक्त स्थान के लिए उपयुक्त पद चुनें–

(a) नाटक (b) भाष्यं

(c) काव्यं (d) रूपकं

Ans. (c) : ''कथ्यते काव्यं इष्टार्थव्यवच्छिन्ना पदावली''।
यह परिभाषा आचार्य दण्डी की है। उनके अनुसार शब्द-अर्थ-रस-सौन्दर्य के मेल से बनी विशिष्टपदावली ही काव्य है।

89. साक्षात् संकेतित अर्थ क्या है?

(a) वाच्यार्थ (b) लक्ष्यार्थ

(c) व्यङ्ग्यार्थ (d) तात्पर्यार्थ

Ans. (a) : साक्षात् संकेतित अर्थ वाच्यार्थ है। शब्द या अर्थ के सम्बन्ध को शब्द शक्ति कहते हैं।
शब्द के आधार पर- अभिधा, लक्षणा, व्यञ्जना
अर्थ के आधार पर- वाच्यार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यङ्ग्यार्थ
'तत्र संकेतितार्थस्य बोधनादग्रिमाभिधा' साक्षात् संकेतित (मुख्य अर्थ) का बोध कराने वाली वृत्ति अभिधा (वाच्यार्थ) है।

90. आचार्य मम्मट के अनुसार काव्य के कितने प्रयोजन हैं?

(a) चार (b) छः

(c) पाँच (d) सात

Ans. (b) : आचार्य मम्मट का काव्यप्रयोजन छः हैं।
काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदेशिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।
(1) कीर्तिलाभ (2) धनलाभ (3) व्यवहारज्ञान (4) अशुभ निवारण (5) कान्ता के समान उपदेश (6) तत्काल परम आनन्द

91. उत्तम काव्य में किसकी प्रधानता होती है?

(a) अलंकार (b) वाच्यार्थ
(c) व्यङ्ग्यार्थ (d) लक्ष्यार्थ

Ans. (c) : उत्तमकाव्य में व्यङ्ग्यार्थ की प्रधानता है।
काव्य के तीन भेद हैं- उत्तम, मध्यम, अधम
उत्तम काव्य- इदमुत्तममतिशयिनि व्यङ्ग्ये वाच्याद्ध्वनिर्बुधैः कथितः।।
अर्थात् वाच्यार्थ (मुख्यार्थ) की अपेक्षा व्यंग्यार्थ जब काव्य में अधिक चमत्कारयुक्त हो, तो उसे उत्तम काव्य कहा जाता है।

92. गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य में क्या गौण होता है?

(a) व्यङ्ग्यार्थ (b) वाच्यार्थ
(c) अलंकार (d) लक्ष्यार्थ

Ans. (a) : गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य में व्यङ्ग्यार्थ गौण होता है।
जब काव्य में व्यङ्ग्यार्थ वाच्यार्थ की अपेक्षा उतना अधिक चमत्कार पूर्ण नहीं होता है, अर्थात् जहाँ व्यङ्ग्यार्थ गुणीभूत होता है, उसे गुणीभूत व्यङ्ग्य काव्य अथवा मध्यम काव्य कहते हैं।

93. शब्द की स्वाभाविक शक्ति कौन है?

(a) अभिधा (b) लक्षणा
(c) व्यंजना (d) तात्पर्या

Ans. (a) : शब्द की स्वाभाविक शक्ति अभिधा है।
वे वाक्य जिनका साधारण शाब्दिक अर्थ और भावार्थ समान हो तो उसे अभिधा शब्द शक्ति कहते हैं।

94. काव्य में पद्संघटना को क्या कहते हैं–

(a) अलंकार (b) रीति
(c) गुण (d) ध्वनि

Ans. (b) : काव्य में पदसंघटना को रीति कहते हैं।
रीतिसिद्धान्त के प्रवर्तक वामन हैं। विशिष्ट पदरचना रीतिः
पदों की संघटना का नाम रीति है। रीतियों की संख्या तीन है-
वैदर्भी रीति, गौड़ी रीति, पाञ्चाली रीति

95. निम्नलिखित में से कौन शब्दालंकार नहीं है?

(a) उपमा (b) अनुप्रास
(c) श्लेष (d) यमक

Ans. (a) : उपमा शब्दालंकार नहीं है। अलंकार के प्रकार हैं- शब्दालंकार, अर्थालंकार
जहाँ शब्दों से काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ शब्दालंकार जहाँ अर्थों से काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो वहाँ अर्थालंकार अनुप्रास, यमक, श्लेष अर्थालंकार के अन्तर्गत आते हैं।

96. किस अलंकार में स्वरवर्णों में विभिन्नता होने पर भी व्यंजन वर्णों में सादृश्य होता है?

(a) यमक (b) रूपक
(c) अनुप्रास (d) उपमा

Ans. (c) : अनुप्रास अलंकार में स्वर वर्णों में विभिन्नता होने पर भी व्यञ्जन वर्णों में सादृश्य होता है।
'अनुप्रासः शब्द साम्यं वैषम्येऽपि स्वस्य यत्।
उदा. लताकुंजं गुंजन्मदवदलिपुंजं चपलयन्
समालिङ्गन्नङ्ग द्रुततरमनङ्गं प्रबलयन्।।

97. उपमा अलंकार के कितने तत्व होते हैं?

(a) दो (b) तीन
(c) चार (d) पाँच

Ans. (c) : उपमा अलंकार के चार तत्व होते हैं।
'साम्यं वाच्यवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः उपमा के चार भेद हैं- उपमेय, उपमान, साधारण धर्म, वाचक शब्द।

98. उपमा अलंकार में क्या नहीं होता है?

(a) उपमान
(b) उपमेय
(c) आरोप
(d) सामान्य धर्म

Ans. (c) : उपमा अलंकार में आरोप नहीं होता है। उपमा अलंकार के चार अंग हैं- उपमेय, उपमान, साधारणधर्म, वाचक शब्द
उदा. मधुर सुधावदधरः पल्लवतुल्योपिपेलषः पाणि।
चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशी चपले च लोचने तस्याः।।

99. उपमेय और उपमान का अभेद वर्णन किस अलंकार का वर्ण्य-विषय है?

(a) अनन्वय (b) रूपक
(c) यमक (d) स्वभावोक्ति

Ans. (b) : उपमेय और उपमान का अभेद वर्णन रूपक अलंकार का वर्ण्य-विषय है।
'तद्रूपकम् भेदो यः उपमानोपमेययोः।' अत्यधिक समानता के कारण, जहाँ उपमेय को उपमान का रूप दे दिया जाए अथवा उपमेय पर उपमान का आरोप कर दिया जाए वहाँ रूपक अलंकार होता है।

100. मन्ये, शङ्के, ध्रुवं, प्रायः, नूनम्, एवं इव किस अलंकार के बोधक तत्व हैं?

(a) उपमा (b) दृष्टान्त
(c) उत्प्रेक्षा (d) रूपक

Ans. (c) : मन्ये, शङ्के, ध्रुवं, प्रायः, नूनम, एव, इव उत्प्रेक्षा अलंकार के बोधक तत्व हैं।
'भवेत् सम्भावनोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य परात्मना।'
उपमान में उपमेय की सम्भावना या कल्पना की जाए वहाँ उत्पेक्षा अलंकार है।
उदा. लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।
असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता।।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति

माध्यमिक शिक्षक पात्रता परीक्षा Bihar STET-2020

संस्कृत

[Exam. Date - 09.09.2020 (Shift-III)] **[Time - 4:00 PM-6:30 PM]**

1. वैदिक मन्त्रों के संग्रह को क्या कहा जाता है?

(a) कथा (b) आख्यान

(c) संहिता (d) आख्यायिका

Ans. (c) : वैदिक मन्त्रों के संग्रह को 'संहिता' कहा जाता है।

- वेदों को हिन्दू धर्म का पहला धार्मिक ग्रन्थ माना जाता है।
- वेद का अर्थ है ज्ञान।
- वेद चार हैं हर वेद के चार भाग हैं।

(1) संहिता → वैदिक भजनों या मंत्रों का संग्रह।

(2) ब्राह्मण → वेद के लिए व्याख्यात्मक पाठ्य-पुस्तक।

(3) आरण्यक → वेद पर आधारित निष्कर्ष।

(4) उपनिषद् → वेदों पर आधारित नैतिक शिक्षा।

2. उद्गाता नामक ऋत्विक् का सम्बन्ध किस वेद से है?

(a) ऋग्वेद (b) सामवेद

(c) यजुर्वेद (d) अथर्ववेद

Ans. (b) : उद्गाता नामक ऋत्विक् का सम्बन्ध 'सामवेद' से है।

वेद	ऋत्विक	उपवेद	देवता
ऋग्वेद	होता	आयुर्वेद	अग्नि
यजुर्वेद	अध्वर्यु	धनुर्वेद	वायु
सामवेद	उद्गाता	गन्धर्ववेद	आदित्य
अथर्ववेद	ब्रह्मा	अथर्ववेद	अङ्गिरा

3. ऋग्वेद में 'त्र्यम्बक' किस देवता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है?

(a) रूद्र (b) इन्द्र

(c) विष्णु (d) सविता

Ans. (a) : ऋग्वेद में 'त्रयम्बक' 'रुद्र' देवता के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

वैदिक धर्म के देवतागण अनेक हैं। उनमें एक रुद्रदेवता भी हैं। वेदों में रुद्र नाम परमात्मा, जीवात्मा तथा शूरवीर के लिए प्रयुक्त हुआ है। यास्काचार्य ने रुद्र देवता का परिचय इस प्रकार दिया है।

"रुद्रो रौतीति सतः, रोरुयमाणो द्रवतीति वा, रोदयतेर्वा, यदरुदंतद्रुद्रस्य रूद्रत्वं' इति काठकम् (निरुक्त) रु का अर्थ 'शब्द करना' है। जो शब्द करता है, अथवा शब्द करता हुआ पिघलता है, वह रुद्र है।

4. सरमा-पणि-संवाद, ऋग्वेद के किस मण्डल एवं सूक्त में है?

(a) 10/90 (b) 10/95

(c) 10/108 (d) 10/121

Ans. (c) : सरमा-पणि संवाद, ऋग्वेद के 10/108 मण्डल एवं सूक्त में है।

इसमें कुल 11 मंत्र है, इसके ऋषि पणि एवं सरमा, देवता-सरमा एवं पणि, छन्द-त्रिष्टुप्, तथा स्वर धैवत है।

इसके प्रमुख सूक्त हैं-

- किमिच्छन्ती सरमा प्रेदमानड् दूरे ध्यहवा जगुरिः पराचैः।
- नाहं तं वेद दभ्यं दभत्स यस्येदं दूतीरसरं पराकात्।
- अयं निधिः सरमे अद्रिबुध्नो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्युष्टाः।
- स्वसारं त्वा कृणवें मा पुनर्गा।
- नाहं वेद भातृत्वं नो स्वसृत्वमिन्द्रो विदुरङ्गरसश्च घोराः।

5. आर्चिक एवं गान, किस वेद के दो भाग हैं?

(a) अथर्ववेद (b) यजुर्वेद

(c) सामवेद (d) ऋग्वेद

Ans. (c) : आर्थिक एवं गान, सामवेद के दो भाग हैं। प्राचीन दृष्टि से सामवेद को दो संहिताओं में विभाजित किया गया है।

(1) आर्थिक संहिता (2) गान संहिता

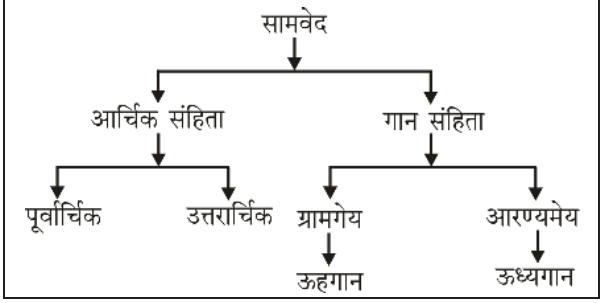

6. 'कठोपनिषद्' किस वेद से सम्बद्ध है?

(a) ऋग्वेद (b) सामवेद

(c) यजुर्वेद (d) अथर्ववेद

Ans. (c) : 'कठोपनिषद् यजुर्वेद' से सम्बद्ध है।

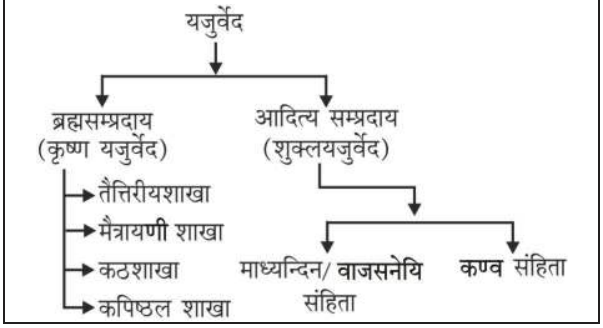

7. वैदिक शब्दों का सही-सही अर्थ बताने वाला वेदाङ्ग कौन-सा है?

(a) शिक्षा (b) कल्प
(c) व्याकरण (d) निरूक्त

Ans. (d) : वैदिक शब्दों का सही-सही अर्थ बताने वाला वेदाङ्ग 'निरुक्त' है।
वेदों में जिन शब्दों का प्रयोग जिन-2 अर्थों में किया गया है, उनके उन-2 अर्थों का निश्चयात्मक रूप से उल्लेख निरुक्त में किया गया है। इसे वेद पुरुष का कान कहा गया है।
वेदाङ्ग छः है।
छन्दः पादों तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
तस्मात्सागमाधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते।।

8. ऊष्म-वर्ग के अन्तर्गत कौन-सा वर्ण-समूह आता है?

(a) य, र, ल, व (b) श, ष, स, ह
(c) क्ष, त्र, ज्ञ (d) ङ, ञ, ण, न, म

Ans. (b) : ऊष्म-वर्ण के अन्तर्गत 'श ष स ह' वर्ण-समूह आता है।

प्रत्याहारों के विषय में स्मरणीय विन्दु

- अच् प्रत्याहार में समस्त स्वर वर्ण आते हैं-ये चार सूत्रों से कहे गये हैं।
- हल् प्रत्याहार में समस्त व्यञ्जन वर्ण आते हैं-ये दस सूत्रों से कहे गये हैं।
- वर्गों के सभी पाँचवे वर्ण ञमङ्णनम् एक ही सूत्र और ञम् प्रत्याहार में आते है।
- वर्गों के चौथे वर्ण दो सूत्रों झभञ्, घढधष् में तथा झष् प्रत्याहार में आते हैं।

9. निम्नलिखित में से कौन रूपक की श्रेणी में नहीं आता है?

(a) विक्रमोर्वशीयम् (b) मालविकाग्निमित्रम्
(c) मेघदूतम् (d) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

Ans. (c) : मेघदूतम् 'रुपक' की श्रेणी में नहीं आता है। महाकवि कालिदास की कुल सात रचनाएँ प्राप्त होती है।
(1) महाकाव्य - रघुवंशम् कुमारसम्भवम्
(2) खण्डकाव्य/गीतिकाव्य - ऋतुसंहार, मेघदूतम
(3) नाटक-अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम् मालविकाग्निमित्रम्

10. चाणक्य की कूटनीति पर आधारित, राजनीति प्रधान नाटक निम्नलिखित में से कौन है?

(a) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (b) स्वप्नवासवदत्तम्
(c) मुद्राराक्षस (d) मृच्छकटिक

Ans. (c) : चाणक्य की कूटनीति पर आधारित, राजनीति प्रधान नाटक 'मुद्राराक्षस' है।
मुद्राराक्षस संस्कृत का ऐतिहासिक नाटक है जिसके रचयिता विशाखदत्त हैं। इसकी रचना चौथी शताब्दी में हुई थी। इसमें चाणक्य और चन्द्रगुप्त मौर्य सम्बन्धी ख्यात वृत्त के आधार पर चाणक्य की राजनीतिक सफलताओं का अपूर्व विश्लेषण मिलता है।

- मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य को 'बृषल' कहा गया है।
- मुद्राराक्षस नाटक में कुल सात अङ्क है तथा इसका प्रधान रस 'वीर' है।

11. 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः.....' प्रस्तुत पंक्ति की प्रेरणा से किस महान ग्रन्थ की रचना हुई है?

(a) रामायण (b) महाभारत
(c) विष्णुपुराण (d) रामचरितमानस

Ans. (a) : 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः प्रस्तुत पंक्ति की प्रेरणा से 'रामायण' ग्रन्थ की रचना हुई है।
रामायण महर्षि वाल्मीकि की कृति है। इसमें सात काण्ड हैं-

	काण्ड का नाम	सर्ग संख्या
(1)	बालकाण्ड	77
(2)	अयोध्याकाण्ड	119
(3)	अरण्यकाण्ड	75
(4)	किष्किन्धाकाण्ड	67
(5)	सुन्दरकाण्ड	68
(6)	युद्धकाण्ड/लंकाकाण्ड	128
(7)	उत्तरकाण्ड	111
	कुल सर्ग संख्या	**645 सर्ग**

12. रामायण के पञ्चम काण्ड को किस नाम से जाना जाता है?

(a) बालकाण्ड (b) अयोध्याकाण्ड
(c) सुन्दरकाण्ड (d) लंकाकाण्ड

Ans. (c) : रामायण के पञ्चम काण्ड को 'सुन्दरकाण्ड' के नाम से जाना जाता है।
रामायण को आदिकाव्य तथा वाल्मीकि को आदिकवि कहा जाता है।

13. 'महाभारत' के रचयिता कौन है?

(a) महर्षि-वाल्मीकि (b) महर्षि वेदव्यास
(c) महर्षि विश्वामित्र (d) महर्षि वशिष्ट

Ans. (b) : महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं।

- विश्व वाङ्मय में सर्वाधिक विशाल ग्रन्थ महाभारत है।
- महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं।
- यह भारतीय जीवन शैली की समग्र और यथार्थ प्रस्तुति है।
- महाभारत में एक लाख से अधिक श्लोक हैं। इसे शत साहस्री-संहिता भी कहते हैं।
- अट्ठारह पर्वो में विभक्त है। इसका सबसे बड़ा पर्व शान्तिपर्व (14 हजार श्लोक) सबसे छोटा पर्व-महाप्रस्थानिक पर्व (1500 श्लोक) हैं।

14. 'अशीतिः' से किस संख्या का बोध होता है?

(a) 70 (b) 80
(c) 79 (d) 81

Ans. (b) : 'अशीतिः' से 80 संख्या का शोध हो रहा है।

संस्कृत शब्द	संख्या
सप्ततिः	70
अशीतिः	80
नवसप्ततिस्त्रू/एकोनाशीतिः	79
एकाशीतिः	81

15. 'अयुतम्' से हमारा अभिप्राय होता है-

(a) एक हजार (b) दस हजार
(c) एक लाख (d) दस लाख

Ans. (b) : 'अयुतम्' से दस हजार का अभिप्राय होता है।
1 हजार - सहस्रम, 10 हजार - अयुतम् 1 लाख - लक्षम्,
10 लाख - नियुतम् / प्रयुतम् ।

16. पुस्तकालये _____ मित्राणि पठन्ति। रिक्त-स्थान की पूर्ति निम्नलिखित में किससे होगी?

(a) त्रयः (b) तिस्रः
(c) त्रीणि (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : पुस्तकालये 'त्रीणि' मित्राणि पठन्ति अर्थात् पुस्तकालय में तीन मित्र पढ़ते हैं।
यहाँ पर मित्राणि नपुंसकलिङ् वाची होने के कारण ही त्रीणि का प्रयोग हुआ है क्योंकि यह भी नपुंसकलिङ्ग वाची ही है।

17. 'सार्धनवादनम्' से हमारा अभिप्राय है-

(a) 8:45 बजे (b) 9:00 बजे
(c) 9:15 बजे (d) 9:30 बजे

Ans. (d) : 'सार्धनववादनम्' से हमारा अभिप्राय '9.30 बजे' से है।
- 8.45 बजे को संस्कृत में - पादोननवादनम्
- 9.00 बजे को संस्कृत में - नववादनम्
- 9.15 बजे को संस्कृत में - सपादनववादनम्

18. 'सः संकल्पं करोति।' इस कर्तृवाच्य के वाक्य का कर्मवाच्य रूप होगा?

(a) तं संकल्पं करोति। (b) तेन संकल्पः क्रियते।
(c) तब संकल्पं कियते। (d) तस्मिन् संकल्पः क्रियते।

Ans. (b) : 'सः संकल्पं करोति' इस कर्तृवाच्य के वाक्य का कर्मवाच्य रूप 'तेन संकल्पः क्रियते' होगा।
सः संकल्पं करोति' - यहाँ पर सः प्रथम पुरुष एकवचन का रूप है तथा क्रिया भी प्र.पु. एकवचन की ही प्रयुक्त हुई है।
कर्तृवाच्य में कर्ता प्रथमा विभक्ति में तथा क्रिया कर्ता के लिङ्ग पुरुष के अनुसार ही होता है।

19. 'उत्कर्षः' का विपरीतार्थक शब्द इनमें से कौन होगा?

(a) अपकर्षः (b) अवकर्षः
(c) अनुकर्षः (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : 'उत्कर्षः' का विपरीतार्थक शब्द 'अपकर्षः' होगा।

20. 'संस्कृतिः' में कौन-सा उपसर्ग है?

(a) सम् (b) संस्
(c) सु (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : 'संस्कृतिः' में सम् उपसर्ग है।
संस्कृतिः का प्रकृति-प्रत्यय है-सम् + कृ + क्त।
संस्कृत में कुल 22 उपसर्ग है-प्र परा अप सम् अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ् नि अधि अति, अपि, परि, अभि प्रति, उप उत् सु।

21. उपसर्ग-प्रयोग की दृष्टि से इनमें से कौन अपवाद है?

(a) परिश्रमः (b) परिजनः
(c) परिसरः (d) पराभवः

Ans. (d) : उपसर्ग-प्रयोग की दृष्टि से इनमें से पराभवः अपवाद है।
परिश्रमः परिजनः तथा परिसरः इन तीनों में परि उपसर्ग है जबकि पराभवः में कोई उपसर्ग नहीं है।
उपसर्ग शब्दों के पूर्व में प्रयुक्त होते है न कि पश्चात् में।

22. अहं चिंतयामि-इस कर्तृवाच्य के वाक्य का भाववाच्य रूप होगा-

(a) मया चिन्त्यते। (b) मह्यं चिन्त्यते।
(c) मम चिन्त्यते। (d) इनमें से कोई नहीं।

Ans. (a) : अहं चिन्तयामि - इस कर्तृवाच्य के वाक्य का भाववाच्य रूप 'मया चिन्त्यते' होगा। कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाने पर कर्ता में तृतीया तथा क्रिया में प्रथम पुरुष एकवचन का रूप प्रकट होता है।
- भाववाच्य में कर्म का अभाव होता है।

23. भाववाच्य के वाक्यों के क्रिया सदैव किस रूप में रहती है?

(a) प्रथम पुरुष, एकवचन (b) प्रथम पुरुष, बहुवचन
(c) उत्तम पुरुष, एकवचन (d) उत्तम पुरुष, बहुवचन

Ans. (a) : भाववाच्य के वाक्यों में क्रिया सदैव प्रथम पुरुष, एकवचन में रहती है।
- इसके कर्ता में तृतीया विभक्ति हो जाती है।
- इसमें कर्म का अभाव होता है।

24. 'पृथ्वी' का पर्यायवाची, निम्नलिखित में से कौन एक नहीं है?

(a) भू (b) वसुन्धरा
(c) वसुधा (d) आत्मजा

Ans. (d) : 'पृथ्वी' का पर्यायवाची 'आत्मजा' नहीं है जबकि भू, वसुन्धरा तथा वसुधा पृथ्वी के पर्यायवाची शब्द है। आत्मजा 'पुत्री' का पर्यायवाची शब्द है।

25. 'कादयोमावसानाः स्पर्शाः के अन्तर्गत कितने वर्ण आते हैं?

(a) 20 (b) 25
(c) 27 (d) 28

Ans. (b) : 'कादयोमावसानाः स्पर्शाः के अन्तर्गत '25' वर्ण आते हैं। क् से लेकर म् तक के वर्ण को स्पर्श वर्ण कहते हैं। स्पर्श वर्ण के अन्तर्गत कु, चु, टु, तु, पु वर्ग के पाँचों वर्ण आते हैं।

26. धातु के अन्त में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय को क्या कहते हैं?

(a) तद्धित प्रत्यय (b) कृत् प्रत्यय
(c) डीप् प्रत्यय (d) डीन् प्रत्यय

Ans. (b) : धातु के अन्त में प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय को 'कृत्प्रत्यय' कहते हैं।
मुख्यतः प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं-(1) कृत् (2) तद्धित
(1) कृत् प्रत्यय-धातुओं से जुड़कर बनते हैं। जैसे-पठ् + क्त = पठितः
(2) तद्धित प्रत्यय-शब्दों से जुड़कर बनते है-जैसे-रम् + धञ् = रामः।

27. 'विहाय' में किस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है?

(a) क्तिन् प्रत्यय (b) तुमुन प्रत्यय
(c) व्यत् प्रत्यय (d) ल्यप् प्रत्यय

Ans. (d) : 'विहाय' में ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग हुआ था ''समासेऽनञ्पूर्वेक्त्वाल्यप्''- जिस समास के पूर्वपद में नञ् से भिन्न कोई अन्य अव्यय स्थित हो तो उस समास में धातु से परे क्त्वा के स्थान पर ल्यप् आदेश होता है।
यथा- वि + क्री + ल्यप् = विक्रीय
अव + मम् + ल्यप् = अवगम्य

28. कथ + तुमुन् से निष्पन्न शब्द होगा-

(a) कथितुम् (b) कथयितुम्
(c) कथतुम् (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (a) : कथ् + तुमुन् से निष्पन्न शब्द 'कथयितुम्' होगा।
सूत्र- तुमुनण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम् - एक क्रिया के लिए दूसरी क्रिया के उपपद में रहते भविष्यत् अर्थ में धातु से तुमुन् और ण्वुल प्रत्यय पर में होते हैं।
जैसे-दृश् + तुमुन् = द्रष्टुम्
अट् + तुमुन् = अटितुम्

29. निम्नलिखित में से कौन स्त्री-प्रत्यय का अपवाद है?

(a) टाप् (b) डीप्
(c) ति (d) यङ्

Ans. (d) : 'यङ्' स्त्री प्रत्यय का अपवाद है।
मुख्यतः स्त्री प्रत्यय आठ (8) है-(1) टाप् (2) डाप् (3) चाप् (4) डीप् (5) ङीष् (6) ङीन् (7) ऊङ् (ऊ) (8) ति।
उदाहरण- अजा = अज + टाप्
सूर्या = सूर्य + चाप
भवन्ती = भवत् + ङीप्
नर्तकी = नर्तक + ङीष्
बैदी = वैद + ङीन्
युवतिः = युवन् + ति

30. 'वयसि प्रथमे'-इस सूत्र से स्त्रीत्व-विवक्षा में किस प्रत्यय का प्रयोग होता है?

(a) ङीप (b) ङीष्
(c) टाप् (d) डाप्

Ans. (a) : 'वयसि प्रथमे' - इस सूत्र से स्त्रीत्व की विवक्षा में डीप् प्रत्यय का प्रयोग होता है।
प्रथमवयोवाचिनाऽदन्तात् स्त्रियां ङीप्स्यात् -
प्रथम (कुमार) अवस्था के वाचक ह्रस्व अकारान्त शब्दों से स्त्रीलिंङ् में ङीप (ई) प्रत्यय होता है।
कुमारी = कुमार + ङीप् (ई) अ का लोप।

31. 'अहर्निशम्' में कौन-सा समास है?

(a) द्विगु समास (b) द्वन्द्व समास
(c) तत्पुरुष समास (d) अव्ययीभाव समास

Ans. (b) : 'अहर्निशम्' में द्वन्द्व समास है।
सूत्र-चार्थे द्वन्द्वः-
च (और) अर्थ में विद्यमान अनेक सुबन्तों का विकल्प से समास होता है और उसे द्वन्द्व कहते है।
च के चार अर्थ हैं- (1) समुच्चय (2) अवाचय (3) इतरेतरयोग (4) समाहार।

32. 'श्वेताम्बरा' में कौन-सा समास है?

(a) अव्ययीभाव (b) तत्पुरुष
(c) कर्मधारय (d) बहुव्रीहि

Ans. (d) : 'श्वेताम्बरा' में बहुव्रीहि समास है।
प्रायेणान्यपदार्थ प्रधानो बहुव्रीहि :-बहुव्रीहि में प्रायः अन्य पद का अर्थ प्रधान होता है। इस समास में सर्वत्र समास होने पर कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रतिपदिक संज्ञा होगी और सुपो धातु. से समस्त पदों के बाद की विभक्तियों का लोप हो जाएगा। उदाहरण-जलजाक्षी, दीर्घसक्थः, त्रिमूर्धः, द्विमूर्धः

33. 'कृष्णश्रितः' का सामासिक विग्रह क्या होगा?

(a) कृष्णः श्रितः (b) कृष्णं श्रितः
(c) कृष्णाय श्रितः (d) कृष्णे श्रितः

Ans. (b) : 'कृष्णश्रितः' का सामासिक विग्रह 'कृष्णं श्रितः' होगा।
सूत्र-'द्वितीया श्रितातीतपतितगतात्यस्तप्राप्तापन्नैः।''
द्वितीयान्त पद का श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त, प्राप्त और आपन्न शब्दों के सुबन्त रूपों के साथ विकल्प से समास होता है और उसे तत्पुरुष कहते हैं।
कृष्णं + श्रितः = कृष्णश्रितः।
दुखम् + अतीतः = दुखातीतः।

34. निम्नलिखित में से कौन क्रियाविशेषण अव्यय का उदाहरण नहीं है?

(a) प्रातः (b) शनैः
(c) श्वः (d) अथ

Ans. (d) : 'अथ' क्रियाविशेषण अव्यय का उदाहरण नहीं है जबकि प्रातः शनैः और श्वः ये तीनों क्रियाविशेषण के उदाहरण है।

35. 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र से किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

(a) द्वितीया (b) तृतीया
(c) चतुर्थी (d) पञ्चमी

Ans. (b) : 'इत्थंभूतलक्षणे' सूत्र से 'तृतीया' विभक्ति का प्रयोग होता है।
जिस चिह्न/लक्षण के द्वारा किसी विशेष अवस्था का बोध कराया जाता है, उस चिह्न में तृतीया होती है।
उदाहरण-जटाभिस्तापसः (जटाओं से तपस्वी) ज्ञात होता है। इसलिए यहाँ जटा चिह्न में तृतीया विभक्ति हुई है।

36. 'भू' धातु के योग में जहाँ से कोई चीज उत्पन्न होती है, उसमें किस विभक्ति का प्रयोग होता है?

(a) तृतीया (b) चतुर्थी
(c) पञ्चमी (d) षष्ठी

Ans. (c) : 'भू' धातु के योग में जहाँ से कोई चीज उत्पन्न होती है, उसमें पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग होता है। सूत्र-भुवः प्रभवः
भू धातु (होना, उत्पन्न होना) के उत्पत्ति स्थान में पञ्चमी विभक्ति होती है। भू का अर्थ है प्रकट होना/उत्पन्न होना। प्रभव का अर्थ है-उत्पत्ति स्थान/उद्गम स्थान। यथा-हिमवतो गुङ्गा प्रभवति। यहाँ उद्गम स्थान हिमवत् में पञ्चमी विभक्ति हुई है।

37. 'स्था' धातु लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप होगा-

(a) अतिष्ठत् (b) अतिष्ठः
(c) अतिष्ठम् (d) अतिष्ठम्

Ans. (b) : 'स्था' धातु लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप 'अतिष्ठ:' होगा।

स्था धातु लङ्लकार

प्र0	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
म0	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उ0	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम्

38. 'आसीत्' अस् धातु के किस लकार का रूप है?

(a) लट्लकार (b) लृट्लकार
(c) लङ्लकार (d) लोट्लकार

Ans. (c) : 'आसीत्' अस् धातु के लङ्लकार का रूप है।

अस धातु लङ्लकार

प्र0	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
म0	आसीः	आस्तम्	आस्त
उ0	आसम्	आस्व	आस्म

39. 'वद्' धातु लोट्लकार, मध्यमपुरुष, द्विवचन का रूप निम्नलिखित में से कौन होगा?

(a) वदताम् (b) वदन्तु
(c) वदतम् (d) वदत

Ans. (c) : 'वद्' धातु लोट्लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन का रूप में से 'वदतम्' होगा।

वद् (बोलना) लोटलकार

प्र0	वदतु	वदताम्	वदन्तु
म0	वद	वदतम्	वदत
उ0	वदानि	वदाव	वदाम

40. 'साधु' शब्द का तृतीया विभक्ति, बहुवचन का रूप होगा-

(a) साधवः (b) साधुना
(c) साधुभिः (d) साधुभ्यः

Ans. (c) : 'साधु' शब्द का तृतीया विभक्ति, बहुवचन का रूप साधुभिः होगा।

साधु शब्द का रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	साधुः	साधू	साधवः
द्वितीया	साधुम्	साधू	साधून्
तृतीया	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
चतुर्थी	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
पञ्चमी	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
षष्ठी	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
सप्तमी	साधौ	साध्वोः	साधुषु
सम्बोधन	हे साधो।	हे साधू।	हे साधवः।

41. 'जगति'-जगत् शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

(a) प्रथमा विभक्ति, एकवचन
(b) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(c) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
(d) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

Ans. (d) : 'जगति' - जगत् शब्द के सप्तमी विभक्ति, एकवचन का रूप है।

जगत (संसार) शब्द रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जगत्/जगद्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पञ्चमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम्
सप्तमी	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

42. 'गुणिषु' - किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?

(a) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
(b) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
(c) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
(d) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन

Ans. (d) : 'गुणिषु' सप्तमी विभक्ति, बहुवचन का रूप है।

'गुणिन्' शब्द के रूप

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वितीया	गुणिनम्	गुणिनौ	गुणिनः
तृतीया	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
चतुर्थी	गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पञ्चमी	गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
षष्ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
सप्तमी	गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सम्बोधन	हे गुणिन्!	हे गुणिनौ!	हे गुणिनः!

43. सूर्य + उदयः = सूर्योदयः-यहाँ किस सूत्र से सन्धि हुई है?

(a) आद्गुणः (b) वृद्धिरेचि
(c) इको यणचि (d) एचोऽयवायायः

Ans. (a) : सूर्य + उदयः = सूर्योदय; - यहाँ आद्गुणः सूत्र से सन्धि हुई है।

सूत्र-आद्गुणः - अवर्ण से अच् परे होने पर पूर्व एवं पर के स्थान पर गुण आदेश होता है। आद्गुणः गुण सन्धि विधायक सूत्र है।

गुण सन्धि के उदाहरण-

(1) उप + इन्द्र = उपेन्द्र
(2) रमा + ईशः = रमेश
(3) गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्

44. 'नयनम्' का सन्धि-विच्छेद होगा?

(a) ने + अनम् (b) ने + अयनम्
(c) नै + अनम् (d) नै + अयनम्

Ans. (a) : 'नयनम्' का सन्धि-विच्छेद 'ने + अनम्' होगा।
सूत्र = एचोऽयवायावः।
एच् (ए ओ ऐ औ) को क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् आदेश हो जाता है बाद में कोई अच् (स्वर) हो तो।
उदाहरण-
(1) हरे + ए ⇒ हर अय् ए हरये।
(2) विष्णो + ए ⇒ विष्ण् अव् ए विष्णवे।
(3) नै + अकः ⇒ न् आय् अकः नायकः।

45. रामे + अपि = रामेऽपि - यहाँ किस सूत्र का प्रयोग हुआ है?

(a) एङः पदान्तादति (b) एङि पररुपम्
(c) इको यणचि (d) इचोऽयवायावः

Ans. (a) : रामे + अपि = रामेऽपि - यहाँ 'एङः पदान्तादति' सूत्र का प्रयोग हुआ है।
पदान्त एङ् (ए, ओ) से परे अत् (ह्रस्व अकार) हो तो पूर्व तथा पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश हो।
उदाहरण-
(1) हरे + अव = हरेऽव
(2) विष्णो + अव = विष्णोऽव

46. 'वा शरि' सूत्र का सम्बन्ध किस सन्धि से है?

(a) स्वर-सन्धि (b) व्यञ्जन-सन्धि
(c) विसर्ग-सन्धि (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : 'वा शरि' सूत्र का सम्बन्ध 'विसर्ग सन्धि' से है। यदि विसर्ग के बाद 'शर्' प्रत्याहार का कोई वर्ण हो तो विसर्ग के स्थान में विकल्प से विसर्ग भी रहता है।
उदाहरण = हरिः + शेते = हरिश्शेते या हरिः शेते

47. निम्नलिखित में से कौन नास्तिक-दर्शन का अपवाद है?

(a) बौद्ध-दर्शन (b) वेदान्त-दर्शन
(c) चार्वाक-दर्शन (d) जैन-दर्शन

Ans. (b) : 'वेदान्त-दर्शन' नास्तिक दर्शन का अपवाद है। दर्शन दो प्रकार का है-
(1) आस्तिक दर्शन-जो वेद-वेदाङ्ग की प्रमाणिकता को स्वीकार करते हैं।
छः हैं-(1) सांख्य (2) योग (3) न्याय (4) वैशेषिक (5) पूर्व मीमांसा (6) उत्तरमीमांसा
(2) नास्तिक दर्शन-जो वेद-वेदाङ्ग की प्रमाणिकता को स्वीकार नहीं करते है वे नास्तिक दर्शन कहलाते हैं-
नास्तिक दर्शन मुख्यतः तीन हैं-(1) चार्वाक (2) बौद्ध (3) जैन।

48. 'कठोपनिषद्' के अनुसार, प्रेय-मार्ग किसका प्रतिपादक है?

(a) विद्या (b) अविद्या
(c) दानशीलता (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (b) : 'कठोपनिषद्' के अनुसार, प्रेय-मार्ग 'अविद्या' का प्रतिपादक है। 'कठोपनिषद्' यजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बन्धित है। इसमें कुल 2 अध्याय है और प्रत्येक अध्याय में तीन-2 वल्लियाँ हैं कठोपनिषद् के प्रथम अध्याय के द्वितीय वल्ली में श्रेय तथा प्रेय मार्ग का वर्णन किया गया है।

49. 'कठोपनिषद्' के अनुसार, नचिकेता ने द्वितीय वर के रूप में यमराज से क्या याचना की?

(a) पिता की प्रसन्नता (b) आत्मतत्व का ज्ञान
(c) अग्निविद्या (d) श्रेय और प्रेय का ज्ञान

Ans. (c) : 'कठोपनिषद्' के अनुसार नचिकेता ने द्वितीय वर के रूप में यमराज से 'अग्निविद्या' की याचना की है। स त्वमग्निँ स्वर्म्यमध्येषि मृत्यो प्रब्रूद्वि त्वं श्रद्दधानाय मध्यम्।
स्वर्गलोका अमृतत्वं भजन्त एतद् द्वितीयेन वृणे वरेण।।
दूसरे वर के रूप में नचिकेता ने उस अग्निविद्या का ज्ञान माँगा जिसके द्वारा अत्यन्त सुख के लोक, स्वर्ग की प्राप्ति होती है और किसी प्रकार का भय नहीं रह जाता।

50. मेघदूत के अनुसार, यक्ष को कर्तव्यहीनता के कारण किसने नगर-निर्वासन की सजा दी?

(a) इन्द्र (b) विष्णु
(c) कुबेर (d) इनमें से कोई नहीं

Ans. (c) : मेघदूत के अनुसार, यक्ष को कर्तव्यहीनता के कारण 'कुबेर' ने नगर-निर्वासन की सजा दी।
मेघदूतम् कालिदास विरचित एक खण्डकाव्य/गीतिकाव्य है। यह दो भागों में विभाजित है-(1) पूर्वमेघ (2) उत्तरमेघ
इसका प्रधान रस विप्रलम्भशृङ्गार है। इसका कथानक ब्रह्मवैवर्तपुराण से सब दूत की कल्पना वाल्मीकीय रामायण से की गयी है। इसका नायक यक्ष (हेमनमाली) ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार तथा नायिका यक्षिणी (विशालाक्षी) है।

51. 'खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशाऽनुसारि यत्'-काव्य के किस विधा का बोध कराता है?

(a) गद्यकाव्य (b) गीतिकाव्य
(c) स्तोत्र-काव्य (d) महाकाव्य

Ans. (b) : 'खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्यैकदेशाऽनुसारियत् - काव्य के 'गीतिकाव्य' विधा का बोध कराता है। जो काव्य के एकदेश का अनुसरण करता है वह खण्ड काव्य होता है। इसे गीतिकाव्य कहते है।

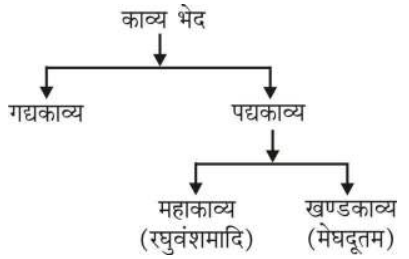

- अर्थात् खण्डकाव्य गीतिकाव्य कहलाता है। किसी देव विशेष की स्तुति में लिखा गया काव्य स्तोत्र काव्य कहलाता है।

52. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नामक नाटक में किस नायिका को धरोहर के रूप में रखा गया है?